

उर्ध्वासि m. N. einer Pflanze, *Momordica Charantia* Lin. (कार्वेल),
TRIK. 2, 4, 37. Hār. 103. — Wird in उर्ध्वा + आसित zerlegt.

उर्ध्वकिर (von उर्ध्वा + किर) in die Höhe heben: उर्ध्वकृत H. 600. Vgl.
उर्ध्वकृत VID. 80.

उर्ध्वक (उर्ध्वा + कृ) m. Bewegung nach oben VOP. 23, 9.

उर्मि (von वरु rollen, wälzen) UP. 4, 45. m. f. TRIK. 3, 5, 17. SIDDH. K.
247, b, 1. Woge, Welle AK. 1, 2, 3, 5. TRIK. 3, 3, 293. H. 1073. an. 2, 316.
MED. m. 3. Das f. nicht zu belegen; instr. ved. auch उर्म्या RV. 1, 184, 2.
सिन्धेरिव प्रस्वन्नितास उर्मयः 44, 12. 32, 7. 93, 10. 3, 33, 2. 7, 47, 1. 2. ये
तै सरस्व उर्मयो मधुमतो धृतश्रुतः 96, 5. यो धारया मधुमौ उर्मिणा दिव
इयति वार्यम् 9, 68, 8. VS. 6, 27. 10, 2. AV. 10, 3, 16. प्रतीपमन्य उर्मियु-
ध्यति ved. P. 3, 1, 85. Kār. KĪTJ. Ça. 15, 4, 23. ÇVETĀÇV. UP. 1, 5. उर्मि-
त्तमा (नौ) MBH. 1, 5639. Anā. 6, 2. R. 3, 27, 10. परिवृत्तोर्मि (वरुणालय)
60, 19. 4, 17, 22. 5, 1, 4. प्रवृद्धोर्मि RAGH. 5, 61. 12, 85. चलोर्मि MEGH. 23.
51. धरोर्मिभिः MBH. 1, 1299. Bildlich: अश्ववर्षन्महाघोरैर्गंधराज्ञं शरो-
र्मिभिः R. 3, 56, 37. 6, 79, 60. शोकोर्मिभिः PRAB. 94, 7. शोकमेहो जरामृत्यु
नुत्पिपासे षडर्मयः sechs Wogen (die dem Lebenslauf sich entgegenwälzen;
WILSON: human infirmity) Sch. zu Bhāg. P. im ÇKDr. उर्मिषट्पातिगं ब्रह्म
BRAHMA-P. in LA. 38, 9. VP. 112. Der Soma heisst मध्वं उर्मिः RV. 2,
16, 5. 3, 47, 1. 6, 41, 2. Nach einem Sch. zu AK. auch उर्मि. Vgl. अत्यु-
र्मि, अन्तर्मि, रुशहर्मि, सूर्मि. — Die Lexicogr. haben noch folg. Bedd.:
Andrang (वेग TRIK. MED.), Eile (ज्व H. an.); schneller Gang (अतिवेग-
समायुक्ता गतिवर्मि: VAIG. beim Sch. zu Çic. 3, 4. Der Text lautet: अश्वाः
प्यधुर्वमुमतीमतिरेचमानास्तूर्णं पयोधय इवोर्मिभिरापततः); भङ्ग (Bruch?)
H. an. MED.; Falte im Kleide; Reihe, Linie (रेखा, लेखा) TRIK. H.
an. MED.; das Sichtbarwerden (प्रकाश, प्राकाश्य) H. an. MED.; Schmerz,
Pein (पीडा TRIK. H. an. वेदना und पीडा MED.); Sehnsucht (उत्काण्ठा)
H. an.; WILSON überdies: association; number, quantity. — Von der-
selben Wurzel stammt KĀKNA Woge, das auch Wolle (vgl. ऊर्णा) be-
deutet.

उर्मिका (von उर्मि) f. 1) Woge. — 2) Falte im Kleide H. an. 3, 12.
13. MED. k. 32. — 3) Fingerring AK. 2, 6, 3, 9. H. 663. H. an. MED. Hār.
173. — 4) Gesumme einer Biene. — 5) Sehnsucht H. an.

उर्मिन् (von उर्मि) adj. wogend, vom Soma RV. 9, 98, 6. स पृथ्यधृम-
तावरीत्रमिणीर्मधुमत्तमाः (KĀTJ. Ça. 4, 2, 32 liest उर्मिणा) TS. 1, 1, 3, 1.
महोर्मिन् vom Meere MATSJO. 41. MBH. 3, 793.

उर्मिमत् (wie eben) adj. gaṇa yavādi zu P. 8, 2, 9. wogenreich, wo-
gend: उर्मिमत्तं समासाय सागारम् R. 4, 9, 38. bildlich: दीर्घेषु नीलेष्व चो-
र्मिमत्सु अग्रह केशेषु नरेन्द्रपत्नीम् MBH. 2, 2225. बलोर्मिमान्साधुरदीनस-
हः 1, 1232. krumm AK. 3, 2, 20. H. 1437.

उर्मिमालिन् (von उर्मि + माला) 1) adj. wogenbekränzt, mit Wogen
geschmückt: वितस्ता MBH. 13, 1694. यमुना R. 2, 113, 21. चलोर्मिमालिन्
(समुद्र) 1, 14, 18. — 2) m. Meer TRIK. 1, 2, 8. RAGH. 5, 61.

उर्मिला (von उर्मि) f. N. pr. eine Tochter Ūnaka's und Gemahlin
Lakshmaṇa's R. 1, 71, 21. 73, 28. 3, 4, 52 (उर्मिला, eben so R. GORR. 1,
73, 20. 73, 20). RAGH. 11, 54. Mutter der Gandharvi Somadā R. 1, 34,
39 (GORR. 1, 33, 37: ऊर्णापु st. उर्मिला). Vgl. über die Bed. des Namens
Ind. St. 2, 392.

ऊर्म्य (wie eben 1) adj. wogend, wallend VS. 16, 31. — 2) f. ऊर्म्या
Nacht NAIGH. 1, 7. तिरस्तमौ दृश ऊर्म्याम् RV. 6, 48, 6. वृक्ष चित्तम् ऊ-
र्म्यापास्तिरः शोचिषा दृशे पावकः 10, 4. 63, 2. 5, 61, 17. 10, 127, 6.

1. ऊर्व (von वरु) m. 1) Behälter; namentlich ein Ort wo sich Was-
ser sammeln, Becken; daher auch von der Wolke gebraucht: ऊर्व इव
पत्रये कामो अस्मे तमा पृण वसुपते वसूनाम् wie ein Behälter (See) ist
weiträumig unser Wunsch, den fülle mit Gütern RV. 3, 39, 19. समान-
मूर्ध्व नद्यः पृणन्ति 2, 33, 3. अथार ऊर्वे अमृतं दुहानाः 3, 1, 16. 4, 30, 2. यश्चा-
समा अन्नो दिव्यतो दिव उरुर्वी अमितिः 2, 13, 7. — 2) Verschluss, Stall
für Vieh: स ऊर्वस्य रेजपत्यपावृत्तिमिन्द्रो गव्यस्य वृत्रा RV. 8, 33, 3. उ-
ह्वाद्वा अमृतः 6, 17, 6. विद्वद्यं मरुतो दृक्कर्मवम् 1, 72, 8. 3, 32, 16. 4, 2,
17. 28, 5. 5, 29, 12. 30, 4. 43, 2. 6, 17, 1. 7, 90, 4. 9, 87, 8. 10, 74, 4. 108, 8.
ऊर्वान्दयन्त गोनाम् 7, 16, 7. — 3) vielleicht so v. a. Gefängnis, Gefan-
genschaft: मरुच्चिदम् एनसो अनीके ऊर्वदिवानामृत मर्त्यानाम् (schütze
uns) RV. 4, 12, 5.

2. ऊर्व m. Bez. der Pitaras: उमा वै पितरः प्रातःसवन ऊर्वा माध्य-
दिने काव्यास्तृतीयसवने AIT. BR. 7, 34. ÇĀKṢH. Ça. 7, 3, 24.

3. ऊर्व m. N. pr. eines Heiligen, aus dessen Schenkel (ऊर्) Aurva,
das unterseeische Feuer, entsprang, HARIV. 2327. fgg. MBH. 13, 2907. das
unterseeische Feuer selbst DURGA zu Nir. 6, 7. SĀJ. zu RV. 3, 30, 19. Vgl.
ऊर्व und और्व. Agni wird so angeredet: उत्तं गुणस्व मधुमत्तमूर्ध्व समुद्रियं
सदनमा विशस्व TS. 5, 3, 10, 6, wo jedoch VS. 17, 87 अर्वन् liest und wo
durch Herstellung von ऊर्व (in der Bed. von 1. ऊर्व 1.) am besten ge-
holfen wäre. — Ūrva (Var.: Dūrva, Mṛdu) N. pr. eines Fürsten VP.
462, N. 16.

ऊर्वरा f. = ऊर्वरा 1. ÇABDAR. im ÇKDr.

ऊर्वशी f. = ऊर्वशी 2. RĪJAM. zu AK. ÇKDr. Bhāg. P. 9, 13, 6. 14, 26.
27, 40. Eben so fehlerhaft ist die Schreibart ऊर्वसी.

ऊर्वशीव s. u. ऊर्.

ऊर्वी (von ऊर्) f. Mitte des Schenkels oder eine dort befindliche
Hauptader: ऊर्नध्य ऊर्वी नाम सुच. 1, 348, 18. 346, 12. 336, 10.

ऊर्व्य (von 1. ऊर्व) adj. in Wasserbehältern (Seen u. s. w.) befindlich
VS. 16, 45. ÇĀTAR. UP. in Ind. St. 2, 42. Sch.: ऊर्वी पृथिवी । तस्या भवाय ।
हान्दसो दीर्घः; andere Erkl. führen das Wort auf 3. ऊर्व zurück. —
Vgl. सूर्व्य.

ऊर्व्यङ्ग n. Pilz Hār. 23. — Nach WILSON: ऊर्वी = ऊर्वी Erde + अङ्ग.

ऊर्वा f. N. einer Pflanze (s. देवताउक) ÇABDAR. im ÇKDr.

ऊलुपिन् m. = उलुपिन् SĪRAS. zu AK. ÇKDr.

ऊलूक m. = उलूक Eule RĪJAM. zu AK. ÇKDr.

ऊवट Var. von उवट und ऊघट Verz. d. B. H. No. 164.

ऊवध्य (AV. ऊवध्य) n. der Inhalt des Magens und der Gedärme:
यह्वध्यमुदरस्यापवाति RV. 1, 162, 10. VS. 19, 84. AV. 9, 4, 16. 7, 17. 11,
3, 12. 12, 3, 39. ऊवध्यगोहं पार्थिवं खनतादित्यहोपायं वा ऊवध्यम् AIT.
BR. 2, 6, 11. TS. 5, 7, 23, 1. ĀÇV. Ça. 3, 3. GRHJ. 4, 9. ÇĀKṢH. Ça. 4, 19, 8.
PĪR. GRHJ. 3, 8. KAUC. 48, 50. ÇĀT. BR. 10, 6, 3. 1. 12, 7, 1, 8. 9, 1, 2. KĀTJ.
Ça. 1, 8, 21. 6, 7, 13.

ऊप्, ऊपति krank sein DHĀTUP. 17, 32.

ऊँय 1) m. a) salzige Erde, Steppensalz (nach Angabe der BRAHMAṆA